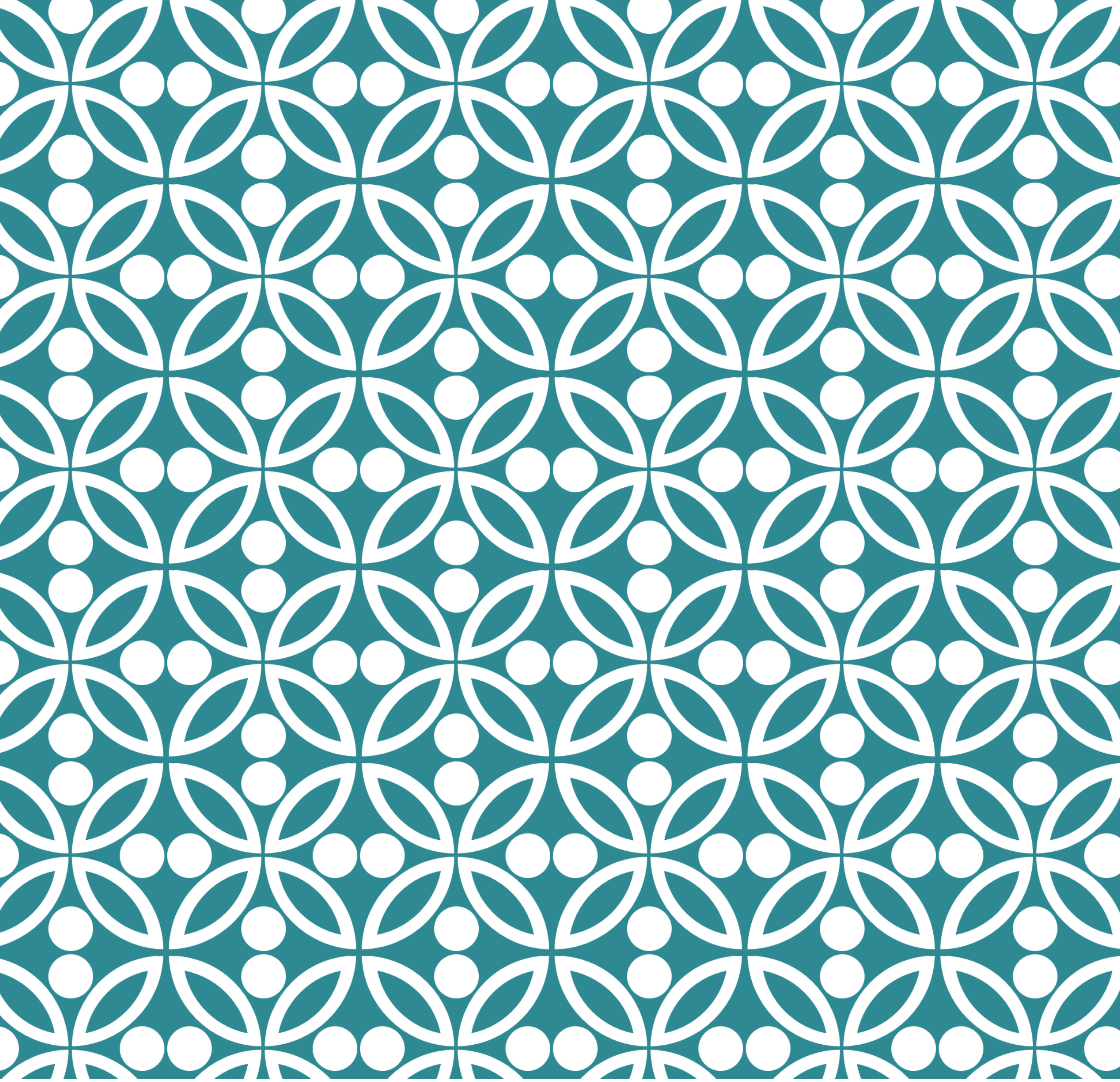

स्पन्दन

वार्षिक हिंदी पत्रिका

अंक 10

वर्ष 2024

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल

राष्ट्रीय महत्व का संस्थान, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

:–संस्थान गान–:

“नागपृष्ठ समारूढं शूलहस्तं महाबलम्।
पाताल नायकं देवं वास्तुदेवं नम्याम्ह्यम्।।”
उठो सुनो प्राची से उगते, सूरज की आवाज।
अपना देश बनेगा सारी दुनिया का सरताज।।
श्रद्धा अपरम्पार कि पत्थर में भी प्रीति जगाई।
ताजमहल पर गर्व हमें हैं, जग भी करे बड़ाई।।
उसी प्रेरणा से रच दें, हम फिर से नया समाज।
स्वागत करने को नवयुग का, नया सजाएं साज़।।
मलिन हो गई धरा आज फिर, उसको पुनः सजाएं।
हरित शिल्प से चलो सृजन का, नारा हम दोहराएं।।
सोये आदर्शों को आओ, सब मिल पुनः जगाएं।
नूतन सृजन हो शिव सृजन, दुनिया में पहुँचाएं।।
उठो सुनो प्राची से उगते, सूरज की आवाज।
एस.पी.ए. के छात्र करेंगे, नवयुग का आगाज़।।

:–संस्थान गीत–:

ढूंढ रहा था, इक नया उजाला,
फिर मिला तू, इस नयी राह में।
तू ही जिन्दगी, तू ही मंजिल,
तू ही हर खुशी, इस दास्तान में।
ये जमीं, ये आसमां,
और सितारे भी हैं अपने साथ।
ये अंधेरा भी टल जायेगा,
कल सवेरा नया लायेगा।।
हर खुशियों में, हर मुश्किल में,
हर लबों पे बस एक ही पुकार,
जी उठे... एसपीए, भोपाल।

तेरी दुआ से, कुछ बन जाऊंगा,
तेरे नाम को, मिटने ना दूंगा।
जहां जहां पर, मेरे कदम पड़ेंगे,
वहाँ तेरा फिर, निशां दिखेगा।
ये जमीं, ये आसमां,
और सितारे भी हैं अपने साथ।
ये अंधेरा भी टल जायेगा,
कल सवेरा नया लायेगा।
हर खुशियों में, हर मुश्किल में,
हर लबों पे बस एक ही पुकार,
जी उठे .... **एसपीए, भोपाल**

अनुक्रमाणिका

क्र.	विवरण	पृष्ठ
01	निदेशक संदेश	01
02	शैक्षणिक एवं प्रशासनिक गतिविधियाँ	02
03	अभिव्यक्तियाँ	13
04	विजयी प्रतिभागियों के लेख	16

नोट– पत्रिका में प्रकाशित सभी कविताएँ, रेखा चित्र, यात्रा वर्णन, संस्मरण इत्यादि रचनाकार द्वारा रचित उसके स्वयं के विचार दर्शाते हैं न कि संस्थान के तथा अपनी रचनाओं के लिए वह स्वयं उत्तरदायी है।

निदेशक संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि विगत वर्ष की तरह इस वर्ष भी हमारे संस्थान में राजभाषा ‘‘हिंदी‘‘ के प्रोत्साहन स्वरूप हिंदी पत्रिका **‘‘स्पन्दन‘‘** के दसम् अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका में संस्थान से जुड़ी शैक्षणिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियां प्रकाशित की जा रही हैं। इसके साथ ही साथ विभिन्न आलेख, सृजन साहित्य, कवितायें, संस्मरण एवं संस्थान के सभी कर्मचारियों की अभिव्यक्तियों एवं विचारों का समावेश किया गया है।

मैं इस पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु स्पंदन से जुड़े सभी शिक्षकों, अधिकारियों व कर्मचारियों को शुभकामनायें देता हूं।

शुभकामनाओं सहित।

प्रो. (डॉ.) कैलासा राव एम.

गणतंत्र दिवस का अयोजन

संस्थान परिसर में गणतंत्र दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रो. अजय खरे, संकायाध्यक्ष (अनुसंधान) ने ध्वजा रोहण किया व संस्थान के सुरक्षा बल ने राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी। संस्थान के छात्रों एवं कर्मचारीगण के बच्चों ने मनमोहक प्रस्तुती दी। जिनमें गीत, भाषण, नृत्य, प्रेटिंग आर्ट परफारमेंस आदि शामिल थे।

अंतराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी योजना एवं वास्तुकला विद्यालय भोपाल के परिसर में अंतराष्ट्रीय योग दिवस का भव्य आयोजन किया गया। उक्त आयोजन में विवेकानंद योग केंद्र कन्याकुमारी की भोपाल शाखा के प्रशिक्षकों को योग अभ्यास हेतु आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम की प्रारंभ मां सरस्वती जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर की गई। संस्थान के कुलसचिव श्री शाजू वर्गीस जी ने सभी का स्वागत किया।

प्रशिक्षकों द्वारा शिविर में योग अभ्यास कराया गया व योग के लाभ और योग के प्रति जागरूकता हेतु व्याख्यान भी दिया गया। संस्थान में कार्यरत समस्त अधिकारी, कर्मचारियों एवं छात्र छात्राओं ने योग, प्राणायाम का अभ्यास सीखा एवं दैनिक जीवन में योग करने हेतु प्रेरित हुए।

"कंठस्थ टूल" पर हिन्दी कार्याशाला का आयोजन

राजभाषा विभाग के सौजन्य से संस्थान परिसर में दिनांक 28 जून 2024 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन कंठस्थ टूल की जानकारी देने हेतु किया गया। कार्यशाला में विशेषज्ञ के रूम में एन. आई. टी.टी.टी. आर., भोपाल से श्री संजय त्रिपाठी जी, पुस्तकालयाध्यक्ष एवं नराकास सचिव को आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला में संस्थान के सभी संकाय सदस्य, अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण तथा कुलसचिव महोदय ने भाग लिया। श्री संजय त्रिपाठी ने कार्यशाला में राजभाषा मंत्रालय द्वारा प्रसारित कंठस्थ टूल के उपयोगिता एवं कार्यालयीन कार्यों में अनुवाद की सरलता के बारे में बताया। इसके आलावा उन्होंने अनुवादिनी जैसे साफ्टवेयर के उपयोग के बारे में भी बताया।

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस कार्यक्रम का आयोजन

शिक्षा मंत्रालय के निर्देशन में प्रथम राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस कार्यक्रम का सीधा प्रसारण आयोजित किया गया था। तदनुसार, इस कार्यक्रम का लाइव प्रसारण संस्थान परिसर के सभा कक्ष में किया गया। उक्त आयोजन में संस्थान के कर्मचारियों, छात्रों और शिक्षकों ने सामूहिक रूप से अपनी उपस्थिति दर्ज की तथा लाइव प्रसारण से लाभान्वित हुए।

स्वतंत्रता दिवस समारोह

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी संस्थान परिसर में स्वतंत्रता दिवस समारोह बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। एसपीए भोपाल के निदेशक प्रो. कैलासा राव एम. ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया तथा छात्रों, कर्मचारियों और शिक्षकों की सभा को संबोधित किया। अपने प्रेरक भाषण में, उन्होंने एसपीए भोपाल परिवार के सभी सदस्यों से संस्थान को और अधिक ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए सभी हितधारकों के सामूहिक प्रयासों को बनाए रखने का आह्वान किया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2024

संस्थान ने 28 अक्टूबर से 03 नवंबर 2024 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया। 28 अक्टूबर 2023 को संकाय और स्टाफ सदस्यों द्वारा सतर्कता की शपथ ली गई। इस वर्ष सतर्कता जाकरूकता ''सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि)'' थीम पर मनाया गया।

हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन

संस्थान परिसर में हिन्दी पखवाड़ा दिनांक 02 से 25 सितम्बर 2024 के मध्य बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ 2 सितम्बर को किया गया। संस्थान के राजभाषा विभाग के इस आयोजन में हिन्दी भाषा के ज्ञान के संवर्धन व व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु कर्मचारियों एवं छात्र छात्राओं की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जैसे ‘प्रशस्ति पत्र अभिकल्पन, निबंध लेखन, स्वरचित कविता पाठ, गजल एवं भजन, हिंदाक्षरी चित्रांकन एवं गीत जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। उक्त प्रतियोगिताओं में संस्थान लगभग 150 संकाय सदस्य, कर्मचारी एवं छात्र छात्राओं ने अपनी सहभागिता दर्ज की। जिनमें से 41 प्रतिभागियों को पुरूस्कार प्रदान किये गये। हिंदी पखवाड़े के समापन में निदेशक महोदय प्रो. कौलाश राव एम. एवं संकायाध्यक्ष (अनुसंधान) प्रो. अजय खरे द्वारा किया गया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्री मनोज श्रीवास्तव जी, सेवा निवृत्त (आईएएस), अध्यक्ष परिसीमन आयोग मध्य प्रदेश को आमंत्रित किया गया था। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि, निदेशक महोदय एवं संकायाध्यक्ष (अनुसंधान) ने प्रशस्ति पत्र व पुरस्कार प्रदान किये।

स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन

संस्थान परिसर में स्वच्छता पखवाड़ा दिनांक 15 से 30 सितम्बर 2024 के मध्य मनाया गया। पखवाड़े का दौरान निम्नलिखित गतिविधियाँ की गईः

- तालाब की सफाई पर श्रमदानः राजस्व अधिकारी के मार्गदर्शन में सुरक्षा कर्मियों और हाउस कीपिंग स्टाफ द्वारा परिसर स्थित तालाब की सफाई की गई।
- संस्थान के छात्रों के मध्य निबंध लेखन और प्रश्नावली का आयोजन किया गया।
- कागज के कचरे का पुर्नउपयोग सिखाया गया।
- कचरे से कला पर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
- समीप के गाँव बरखेडा सालम के विद्यालय में जागरूकता फैलाने हेतु नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया।
- कक्षाओं में अंक ज्ञान व विज्ञान का चित्रण कराया गया।

एसपीए भोपाल का 11वां दीक्षांत समारोह संपन्न

ग्यारहवां दीक्षांत समारोह
योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल
२५ अक्टूबर २०२४
Eleventh Convocation
School of Planning and Architecture, Bhopal
25 October 2024

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय (एसपीए) भोपाल का 11वां दीक्षांत समारोह संस्थान परिसर में दिनांक 25 अक्टूबर 2024 को आयोजित किया गया। प्रोफेसर किशोर कुमार बासा, अध्यक्ष, राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण, भारत सरकार, इस शुभ अवसर पर मुख्य अतिथि थे।

प्रो. हाकम दान चारण, अध्यक्ष, बोर्ड ऑफ गवर्नर्स (शासी मण्डल) ने दीक्षांत समारोह के प्रारंभ की घोषणा की। निदेशक, प्रो. कैलाश राव एम. ने मुख्य अतिथि और उपस्थित गणमान्य अतिथियों एवं विद्यार्थियों का स्वागत किया एवं विगत वर्ष में हुई एसपीए भोपाल की गतिविधियों और उपलब्धियों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि हमारे छात्रों ने प्रसिद्ध संगठनों द्वारा आयोजित विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय खेल आयोजनों, प्रतियोगिताओं और सम्मेलनों में भाग लेकर एवं पुरस्कृत होकर संस्थान का नाम रोशन किया। निदेशक महोदय ने पिछले वर्ष के दौरान संस्थान द्वारा आयोजित प्रमुख गतिविधियों से अवगत किया, जिनमें अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, प्रशिक्षण कार्यक्रम, राष्ट्रीय कार्यशालाएं, उत्कृष्टता केंद्र स्थापना और प्रतिष्ठित अनुसंधान और परामर्श परियोजनाएं आदि शामिल थीं।

बर २०२४
25 October 202

मुख्य अतिथि, प्रोफेसर किशोर कुमार बासा दो दशकों से अधिक समय तक उत्कल विश्वविद्यालय में पुरातत्व विभाग में प्रोफेसर पद पर भी कार्यरत रहे थे। उन्होंने दीक्षांत "एंथ्रोपोसीन के दौरान आर्किटेक्ट्सः भारत में एक पेशे के रूप में वास्तुकला के लिए चुनौतियां" विषय पर भाषण दिया और सभी स्नातकों को बधाई दी।

सिनर्जी 2024

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल में खेल और सांस्कृतिक इंटर एसपीए का तीन दिवसीय पर्व सिनर्जी 2024 का सफलता पूर्वक आयोजन हुआ।

इस अवसर पर एसपीए भोपाल के छात्र निकाय, के साथ संकाय एवं कर्मचारीगण, 16 मार्च, 2024 को कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में शामिल हुए, जिसके मुख्य अतिथि श्री राजीव मिश्रा जी सादर आमंत्रित थे। छात्रों को अपने छिपे हुए कौशल को व्यक्त करने और रचनात्मक सीख के नए क्षेत्रों का पता लगाने के लिए एक मंच प्रदान किया था। उक्त आयोजन में परिसर के चारों ओर विभिन्न स्थानों पर एकल गायन, माइम एक्ट और मोनोएक्ट और समूह नृत्य प्रतियोगिता सहित कार्यक्रमों की एक श्रृंखला आयोजित की गई। जबकि दूसरे दिन, सुबह के शुरुआती समय में परिसर में आयोजित फोटो वॉक, दीवार पेंटिंग, लघु मॉडलिंग, वाद–विवाद प्रतियोगिताओं और बैंड में कॉलेजों द्वारा किए गए अद्भुत प्रदर्शन जैसी गतिविधियों ने सभी को मनोरंजित किया। तीसरे दिन एकल और युगल नृत्य प्रतियोगिता में प्रतिभागियों की कुछ सुंदर कार्यक्रम, स्टोरीबोर्डिंग में शानदार कल्पना और इंटरस्टेलर फैशन वॉक में फैशन की उत्कृष्ट समझ देखने को मिली।

सांस्कृतिक गतिविधियों के अलावा, सिनर्जी ने शतरंज, टेबल टेनिस, बास्केटबॉल, वॉलीबॉल, बैडमिंटन, फुटबॉल, क्रिकेट और कबड्डी सहित खेलों की मेजबानी की। कला, रंगमंच, नाटक, मिट्टी के बर्तन बनाने और कविता, रचनात्मक लेखन और भाषण की प्रतिभागिताओं की सहायता से कार्यक्रम में कई कार्यशालाएँ भी शामिल की गईं। उत्सव को सफल बनाने के लिए नासा (वास्तुकला के छात्रों का राष्ट्रीय संघ) की टीम ने इंटरैक्टिव आइसब्रेकर सत्रों के अलावा जनता के लाभ के लिए छात्रों के शैक्षणिक कार्यों की एक प्रदर्शनी का आयोजन किया है।

जिसमें किसी विषय के बारे में जानकारी देने के लिए एक ओपन माइक और एक प्रश्नोत्तरी शामिल थी।

प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों के अलावा हर दिन रोमांचक स्टेज शो आयोजित किये गये, जिसमें ऊर्जा से भरपूर सूफी बैंड अपनी धुनों से मंच को चकाचौंध करने वाले जीवंत कलाकार एव डीजे नाइट्स शामिल थे।

एसपीए भोपाल में सार्वभौमिक मानव मूल्य पर संकाय विकास कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान परिसर में दिनांक 4 जनवरी से 6 जनवरी 2024 के मध्य तीन दिवसीय संकाय विकास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम का विषय सार्वभौमिक मानव मूल्य था। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि निजी विश्वविद्यालय नियामक आयोग के अध्यक्ष भरत शरण सिंह थे। विशिष्ट अतिथि एन.आई.टी.टी.टी.आर. भोपाल के निदेशक प्रो. चंद्र चारू त्रिपाठी थे। इस अवसर पर भरत शरण ने वैश्विक मानव मूल्य के संदर्भ में भारतीय सनातन परंपरा और भारतीय ज्ञान परंपरा का उल्लेख करते हुए इस विषय को सभी शिक्षकों के मध्य पहुंचाने पर बल दिया।

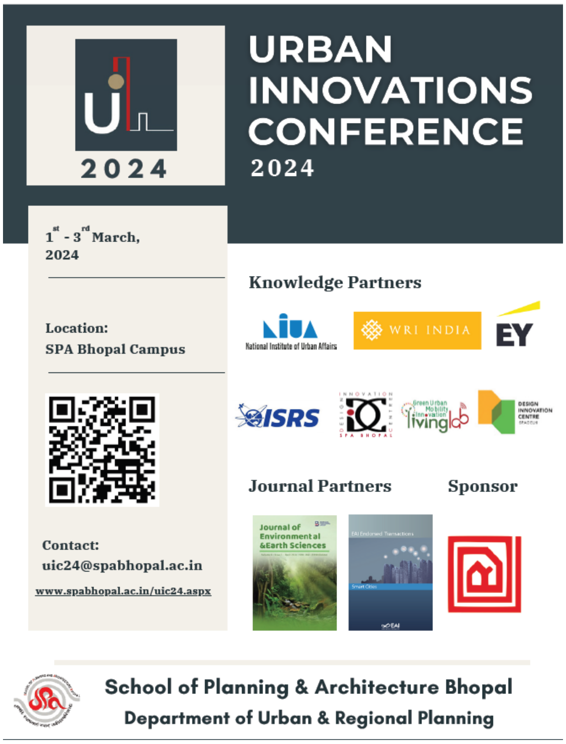

URBAN INNOVATIONS CONFERENCE 2024

1st - 3rd March, 2024

Location: SPA Bhopal Campus

Contact: uic24@spabhopal.ac.in
www.spabhopal.ac.in/uic24.aspx

Knowledge Partners

Journal Partners

Sponsor

School of Planning & Architecture Bhopal
Department of Urban & Regional Planning

अर्बन इनोवेशन कान्फ्रेंस का आयोजन

संस्थान परिसर में दिनांक 1 मार्च से तीन दिवसीय सम्मेलन अर्बन इनोवेशन कान्फ्रेंस का आयोजन किया गया। उक्त सम्मेलन में संस्थान के संकाय सदस्यों व छात्रों के साथ देश भर से आए प्रतिनिधियों द्वारा भारी संख्या में सदस्यता ली गई।

उक्त कान्फ्रेंस के विषय : स्मार्ट मोबिलिटी, नवाचार के लिए डेटा, शहर का स्वचालन, रेज्यिलेंट सपोर्ट, नवाचारों को मुख्यधारा में लाना, नागरिक समाज से नवाचार, आदि थे। उक्त आयोजन में एनआईयूए, डब्ल्यूआरआई, ईएंडवाई और जीआईजेड लिविंग लैब जैसे प्रतिष्ठित संगठनों के प्रतिनिधियों द्वारा व्यक्तिगत रूप से या ऑनलाइन सत्रों के माध्यम से प्रस्तुति दी गई।

वास्तुकला विभाग द्वारा बाम्बू डिजाइन ऑफ रूफ पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

वास्तुकला विभाग द्वारा 24–25 अगस्त 2024 को "लकड़ी से छत की संरचना और मॉडल" पर दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई।

कार्यशाला का उद्देश्यः लकड़ी को एक निर्माण सामग्री और पर्यावरण अनुकूल सामग्री के रूप में समझना और उसे निर्माण कार्यों में उपयोग करना था। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए लकड़ी के माध्यम से विभिन्न प्रकार की छतों की संरचना करते हुए सदस्यों, कार्यात्मक अवधारणाओं को समझना और संरचनात्मक अखंडता के साथ उसका मॉडल बनाया।

छात्रों ने 5–6 के समूहों में काम किया और छत का डिजाइन तैयार किया। डिजाइन पर प्रत्येक समूह ने उचित पैमाने पर एक मॉडल तैयार किया, जिसमें डिजाइन की गई छत के लिए मजबूत ढांचा बनवाया गया। कार्यशाला के विशेषज्ञ आर्किटेक्ट अनुराग खंडेलवाल थे, कार्यक्रम का संयोजन डॉ. नयना सिंह के साथ गरिमा ताम्रकार, शिवांगी ठाकुर और ब्रशभानलली रघुवंशी ने किया।

एसपीए भोपाल में स्टूडेंट इंडक्शन प्रोग्राम (एसआईपी) का आयोजन

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय भोपाल ने शैक्षणिक सत्र 2024–25 में आये नये छात्रों के स्वागत के लिये स्टूडेंट इंडक्शन प्रोग्राम (एसआईपी) का आयोजन किया। जिसमें नये छात्रों एवं उनके अविभावकों को संस्थान के नियमों व विनियमों की जानकारी दी गई। कार्यक्रम का उद्देश्य नये छात्रों को उच्च शिक्षा के वातावरण को सहजता से स्वीकार करना सिखाना और संस्थान की कार्यप्रणाली से परिचित कराना था। इस दौरान, छात्रों को सेल्फ मेनेजमेंट, स्वास्थ्य, संबंध, समाज के बारे में विशेषज्ञों से जानने का मौका मिला। इसके अलावा छात्रों को योग, एरोबिक्स, खेल, क्रियात्मक कार्यशालाएं, पेंटिंग और सांस्कृतिक गतिविधियां भी कराई गई ताकि छात्र एक दूसरे से घुल मिल सकें।

सतत जीवन शैली एवं जलवायु अनुकूल निर्माण अभिकल्पना एवं योजना विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन

A National Conference
Holistic Action for Rejuvenating of In
Building Resilience - Future

संस्थान परिसर में सतत जीवन शैली एवं जलवायु अनुकूल निर्माण अभिकल्पना एवं योजना विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मलेन में विभिन्न विषयों पर पैनल चर्चा के छह सत्र आयोजित किए गए। पद्मश्री श्री महेश शर्मा, पर्यावरण संरक्षणवादी और सामाजिक कार्यकर्ता ने झाबुआ, मध्य प्रदेश में एक समुदाय संचालित पहल 'शिव गंगा' आंदोलन पर चर्चा की, जो वर्षा जल संचयन, भूजल पुनर्भरण और वनीकरण के माध्यम से जल संरक्षण पर ध्यान केंद्रित करता है। जिसने सफलतापूर्वक स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्जीवित किया है और कृषि उत्पादकता में सुधार करके प्रवासन को कम किया है। पद्मश्री डॉ. जनक पलटा मैकगिलिगन, संस्थापक–निदेशक, जिमी मैकगिलिगन सेंटर फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट, इंदौर ने सतत जीवन के व्यावहारिक मॉडल पर चर्चा की, जिसमें दिखाया गया कि कैसे विशेष रूप से ग्रामीण महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग, जैविक खेती और स्वास्थ्य को बढ़ावा देकर पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान कर सकते हैं। डॉ. प्रसाद देवधर, भागीरथ ग्राम विकास प्रतिष्ठान, गोवा के संस्थापक ने ऊर्जा और स्वच्छता के लिए बायोगैस का उपयोग करने, एलपीजी पर निर्भरता कम करने और खुली आग में खाना पकाने से होने वाले हानिकारक उत्सर्जन को नियंत्रित कर स्वास्थ्य में सुधार करने पर ध्यान केंद्रित किया। डॉ. एस. विश्वनाथ, बायोम एनवायर्नमेंटल ट्रस्ट, वाटर विजडम, बेंगलुरु ने पारंपरिक वाटरशेड पारिस्थितिकी तंत्र, वर्तमान और भविष्य के शहरी और ग्रामीण जल प्रबंधन में उनकी भूमिका से अवगत किया। उन्होंने पेयजल सुरक्षा के लिए भूजल पुनर्भरण, झीलों और कुओं सफाई, गाद उत्सव और महिलाओं के नेतृत्व वाली टैंक सफाई जैसी सांस्कृतिक प्रथाओं पर प्रकाश डाला। प्रो. डॉ. चित्ररेखा काबरे, प्रोफेसर, वास्तुकला विभाग, एसपीए दिल्ली ने जलवायु चुनौतियों के समाधान के रूप में पुर्नयोजी डिजाइन और बायोसेंट्रिक दृष्टिकोण की खोज की। उन्होंने ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने और पर्यावरणीय प्रभावों से निपटने में स्वदेशी वास्तुकला की भूमिका पर जोर दिया। सुश्री सुरभि तोमर, पर्यावरण संरक्षण गतिविधि ने जैसलमेर में घरों और स्कूलों का उदाहरण देते हुए भवन निर्माण और संचालन में ऊर्जा के उपयोग पर चर्चा शुरू की। उन्होंने निर्माण सामग्री के रूप में बांस के उपयोग पर भी जोर दिया, क्योंकि इसमें स्टील की जगह लेने की क्षमता है। उन्होंने नॉर्वेज़ियन लकड़ी की ऊंची इमारतों का भी हवाला दिया और बताया कि उन्हें स्थानीय संशोधनों के साथ कैसे दोहराया जा सकता है। आर्किटेक्ट. हबीब खान, अध्यक्ष, शाषी मण्डल, एसपीए दिल्ली ने सतत विकास, प्रकृति के साथ परस्पर निर्भरता और मानसिकता में बदलाव की आवश्यकता पर चर्चा की। उन्होंने आध्यात्मिकता और पर्यावरण मनोविज्ञान, समुदायों के प्रति सम्मान, जलवायु और प्रकृति के संयोजन वाले एक दर्शन का वर्णन किया । ''मैं पृथ्वी पर एक आगंतुक हूं'' जैसी धारणाओं ने उनके भाषण के सार पर प्रकाश डाला।

सुश्री आर्य चावड़ा, लेखिका, चित्रकार, वक्ता, पर्यावरण कार्यकर्ता, अहमदाबाद ने पर्यावरण मनोविज्ञान पर सामुदायिक भागीदारी के साथ युवा नेतृत्व वाले स्थानीय समाधानों पर जोर दिया। प्रो. बिनीशा पायट्टाती, इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वेस्ट मैनेजमेंट, बेंगलुरु की कार्यकारी निदेशक ने रीसाइक्लिंग और प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन पर ध्यान देने के साथ सतत विकास के लिए महत्वपूर्ण पहलुओं के रूप में सर्कुलर इकोनॉमी और रीसाइक्लिंग पर चर्चा की। उन्होंने भोपाल और हैदराबाद के अपशिष्ट से सीएनजी संयंत्रों का केस अध्ययन प्रस्तुत किया। आर्किटेक्ट संदीप विरमानी, निदेशक हुनरशाला, भुज ने भवन निर्माण में स्थानीय सामग्रियों के उपयोग पर जोर दिया। उन्होंने भूटान, बिहार के बाढ़ प्रभावित मिथलांचल क्षेत्र, भूकंप प्रभावित राज्य गुजरात और मुजफ्फरनगर से संबंधित अपने अनुभव साझा किए।

आर्किटेक्ट अमोघ कुमार गुप्ता, अध्यक्ष, शाषी मण्डल, एसपीए विजयवाड़ा ने वास्तुकला पाठ्यक्रम में वास्तु को शामिल करने पर विचार–विमर्श किया। उन्होंने कहा कि आदर्श विकास शोषण–केंद्रित नहीं होना चाहिए और वास्तुकला और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में अनुभवात्मक शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। आर्किटेक्ट लोकेंद्र बालासरिया, प्रैक्टिसिंग अर्बन इकोलॉजिस्ट, अहमदाबाद ने गुजरात के मेट्रो शहरों में डीजल से चलने वाली कारों से कार्बन उत्सर्जन, मच्छर निरोधक जैसे रोजमर्रा के उत्पादों में न्यूरोटॉक्सिन और शहरी जल सुरक्षा सुनिश्चित करने में वर्षा जल संचयन की भूमिका के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए काम किया है। डॉ. अंशू शर्मा, पार्टनर एसटीएस ग्लोबल, सह–संस्थापक सीड्स ने सामुदायिक पहल के लिए स्वदेशी प्रथाओं और ज्ञान की बात की। डॉ. राजन कोटरू, मुख्य तकनीकी सलाहकार, इंडो–जर्मन कार्यक्रम, ने पारंपरिक प्रथाओं के माध्यम से हिमालय क्षेत्र में बहु–हितधारक दृष्टिकोण की आवश्यकता पर जोर दिया। आर्किटेक्ट कृति ढींगरा, प्रिंसिपल आर्किटेक्ट, संश्रया डिजाइन स्टूडियो, धर्मशाला ने स्थानीय वास्तुकला के लिए मिट्टी और जैविक सामग्री से बनी निर्माण सामग्री की जानकारी साझा की। धर्मेश जड़ेजा, कार्यकारी संस्थापक, ड्यू स्टूडियो, ऑरोविले ने डिजाइन और वास्तुकला के माध्यम से आवासों के कायाकल्प पर बात की। आर्किटेक्ट संजीव शंकर ने समुदायों के साथ काम करने पर अपने अनुभव साझा किए। श्री गोपाल आर्य, राष्ट्रीय संयोजक, पर्यावरण संरक्षण गतिविधि, समापन सत्र के मुख्य अतिथि थे और प्रो. कैलासा राव, निदेशक एसपीए भोपाल ने सम्मेलन पर चर्चा की। सम्मेलन समन्वयक प्रो. रमा उमेश पांडे ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

संस्थान ने भवनों का नामकरण

संस्थान की इमारतों को पहचान देने और परिसर के भीतर आवागमन को सुविधाजनक बनाने के लिए, संस्थान ने भवनों का नामकरण शुरू किया है। ये नाम खूबसूरती से भारत की समृद्ध परंपराओं को दर्शाते हैं और शिक्षकों, छात्रों और परिसर के निवासियों में गर्व की भावना भी पैदा करते हैं।

सतपुड़ा
Satpura

एसपीए भोपाल में ग्राम पंचायत स्थानिक विकास योजना पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन

ग्राम पंचायत स्थानिक विकास योजना पर दो दिवसीय क्रॉस लर्निंग इंटरएक्टिव राष्ट्रीय कार्यशाला एसपीए भोपाल में सफलतापूर्वक संपन्न हुई, जो जमीनी स्तर पर स्थानिक योजना पहल को आगे बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर, भोपाल के सहयोग से पंचायती राज मंत्रालय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में देश भर के विभिन्न राज्यों से ग्राम पंचायतों, योजना संस्थानों और सरकारी अधिकारियों की सक्रिय भागीदारी देखी गई। कार्यशाला को सचिव, पंचायती राज मंत्रालय श्री विवेक भारद्वाज अपर मुख्य सचिव, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, मध्य प्रदेश सरकार, श्री मलय श्रीवास्तव पंचायती राज मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव, डॉ. चंद्र शेखर कुमार संयुक्त सचिव, पंचायती राज मंत्रालय, श्री आलोक प्रेम नागर और निदेशक, स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर, भोपाल प्रोफे. कैलाश राव एम. सम्मिलित थे।

on
Gram Panchayat Spatial Development Plan (GPSDP)
Ministry of Panchayati Raj, Government of India
22nd - 23rd February 2024

अर्बन फेलो प्रोग्राम पर सत्र का आयोजन

संस्थान परिसर में दिनांक, 9 अप्रैल 2024 को सायं 4:30 बजे से स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर के अंतिम वर्ष के छात्रों के लिए अर्बन फेलो प्रोग्राम पर एक सत्र का आयोजन किया गया, उक्त सर्टिफिकेट प्रोग्राम में विभिन्न अवसरों के विषय पर चर्चा की गई, जो एसपीए, भोपाल के छात्रों के लिए उपयोगी थे। उक्त आयोजन में विशेषज्ञ के रूप में श्री तन्मय शुक्ला, मीडिया प्रभारी आई.आई. एच. एस. से आमंत्रित थे।

छात्रों ने मनाया गुडी पड़वा महोत्सव

संस्थान परिसर में छात्रों ने दिनांक 9 अप्रैल 2024 महाराष्ट्री पर्व गुड़ी पड़वा बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया संस्थान के संकाय सदस्य एवं कर्मचारियों ने भी पूजा में भाग लिया।

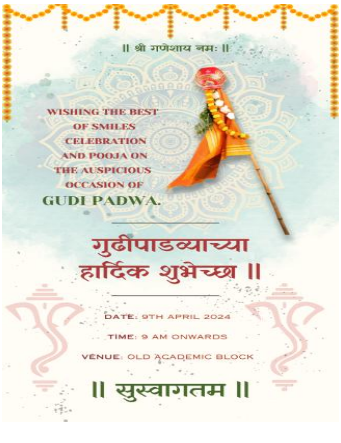

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

WISHING THE BEST
OF SMILES
CELEBRATION
AND POOJA ON
THE AUSPICIOUS
OCCASION OF
GUDI PADWA.

गुढीपाडव्याच्या
हार्दिक शुभेच्छा ॥

DATE: 9TH APRIL 2024
TIME: 9 AM ONWARDS
VENUE: OLD ACADEMIC BLOCK

॥ सुस्वागतम ॥

एसपीए भोपाल में अपशिष्ट एवं खाद प्रबंधन स्थल की स्थापना

एसपीए भोपाल ने अपने परिसर में अपशिष्ट एवं खाद प्रबंधन स्थल की स्थापना की, इस सुविधा की क्षमता 5.6 टन कचरे की है और इसे संस्थान के संयंत्र प्रयोगशालाओं और परिसर में अन्य बागवानी जरूरतों के लिए उपयोग के लिए खाद में परिवर्तित किया जाएगा। इस सुविधा के संचालन के साथ, परिसर स्थानीय लोगों के साथ स्वच्छ भारत अभियान में सक्रिय भूमिका निभाएगा।

संस्थान परिसर में लैंडस्केप योजना

संस्थान परिसर में नए शैक्षिक भवन के समीप, एक परिकल्पित लैंडस्केप योजना बनाई गई है, जो भवन के आस पास की जगहों को एक सुसंगत रूप में एकीकृत करेगी, लैंडस्केप योजना न केवल परिसर को हरा–भरा बनाएगी बल्कि यह एक ऐसा मार्ग भी दिखाएगी जहाँ स्थिरता, दक्षता और सहकारी भावना में सभी विलीन हो जाएं। अंततः, यह डिजाइन इस स्थान के प्रत्येक व्यक्तिगत उपयोगकर्ता के विचारों, दृष्टिकोणों और डिजाइन आदर्शों का एक सुंदर प्रमाण बन जाएगा, जो एसपीए विरासत का एक प्रमुख प्रतीक होगा।

स्वरचित लेख एवं कवितायें

भारत का अभिमान है हिंदी,
भारत मां की आन हैं हिंदी,
बेशक सब भाषाएं बेहतर ही है
पर मेरा तो स्वभाव है हिंदी,
देश को साथ जोड़े हैं हिंदी,
काम काज की भाषा हैं हिंदी,
लाख भले मॉर्डन बन जाना,
इंग्लिश पढ़ लिख जेंटलमैन बन जाना,
सूट बूट टाई तुम लगाना,
पर जब भी अपनी भाषा में बात करोगे,
तो वह अनुपम सुख की प्राप्ति है हिंदी,
भारतवासियों का भाव है हिंदी,
मन का सारा सार है हिंदी,
जीवन का आधार है हिंदी,
जब मन के सारे पाप धोने हो,
त्रिवेणी सा संगम है हिंदी
चार धामों सी सुखद यात्रा है हिंदी,
भारत का अभिमान है हिंदी,
भारत मां की आन हैं हिंदी,
माना कुटिल नीतियों की वजह हो,
राज्यभाषा तक ही सीमित हैं हिंदी,
पर राष्ट्र के लिए राष्ट्रभाषा ही है हिंदी,
समय आयेगा ही जब इससे भी शोभित होगी हिंदी,
हिन्दू, हिंदुस्तानी राष्ट्र बनायेगी हिंदी,
अपना वंश अखंड भारत बनायेगी हिंदी,
अपना इतिहास दोहराएगी हिंदी,
भारत को विश्वगुरु फिर बनायेगी हिन्दी
भारत का अभिमान है हिंदी,
देशवासियों का स्वाभिमान है हिंदी ।

– आयुष दांगी
प्रशिक्षु, पुस्तकालय

सफर जिंदगी का चलता रहेगा यूँ ही
लोग मिलते–बिछड़ते रहेंगे यूँ हीं
कुछ पल का है, हर एक पड़ाव यहाँ
पड़ाव–दर–पड़ाव हम गुजरते रहेंगे जहाँ
जाने कब जाना पड़ जाये इन पड़ावों से
सोचती हूँ में कभी–कभी यूँ ही
जो मिले लोग मुझे जब तक सफर में
सभी से कुछ–कुछ मिल गया यूँ ही
न वादा, न इनकार हैं निभाने का
पर मैं कोशिश करती रहूंगी यूँ ही
कभी अनजाने में जो हो गई हो गुस्ताखी मुझसे
माफ कर देना मुझे तुम–सब यूँ ही

रेनू पाठक
पुस्तकालय सहायक

मेरा परिवार

माँ कैसी होती है?
जो कहती है 'मुझे भूख नहीं है'
पर अपनी रोटी बच्चों को खिला देती है
जिसे समझो तो बच्चे जैसी,
और बात करो तो सखी बन जाती है

पिता कैसे होते हैं?
जो धूप में जलते हैं,
ताकि बच्चे छाँव में सुकून से सो सकें
जो तुम्हारा उतरा चेहरा नहीं देख सकते,
और इसी डर से तुम्हें डाँट भी देते हैं

भाई कैसा होता है?
जो तुम्हारे लिए मार खा लेता है,
फिर वही आकर तुमसे लड़ भी लेता है

बहन कैसी होती है?
जो तुम्हारे साथ सब कुछ बाँटने से मना करती है,
पर खुद ही अपनी सबसे प्यारी चीज तुम्हें दे देती है

नानी कैसी होती है?
जो तुम्हारी माँ को डाँट सकती है,
पर तुम्हें कोई काम कहने से पहले सौ बार सोचती है
जो गुस्सा भी कर ले,
पर तुम्हारे बिना एक पल भी नहीं रह सकती

नाना कैसे होते हैं?
जिनके पास कोई नई मजेदार बात हो,
तो सबसे पहले तुम्हें बताते हैं
जो तुमसे कभी नाराज नहीं हो सकते,
और तुम्हारी गलती को भी तुम्हारी मम्मी के
सिर डाल देते हैं

ताऊ कैसे होते हैं?
जो तुम्हारी हर जिद पूरी करते हैं,
और हँसकर कहते हैं, 'मम्मी को मत बताना!'
जो तुम्हें बिगाड़ भी देते हैं,
और दुनिया की सबसे बड़ी सीख भी वही देते हैं

ताई कैसी होती है?
जो कभी तुम्हें डाँट नहीं सकती,
पर तुम्हें राजकुमार–राजकुमारी सा प्यार देती है
जो सिर्फ तुम्हारे लिए रोज नए पकवान बनाती
है

अम्मा कैसी होती है?
जो कितनी भी देर हो जाए,
तुम्हें बिना कहानी सुनाए नहीं सुलाती है
जो तुम्हारा हाथ पकड़कर
दुनिया की सबसे खूबसूरत सैर कराती है

बाबा कैसे होते हैं?
जो कुछ भी भूल सकते हैं,
पर आशीर्वाद देना कभी नहीं भूलते
जो कहानियों के साथ
अपनी जिन्दगी के अनुभव तुमसे साझा करते हैं

चाचा कैसे होते हैं?
जो दिनभर दुनिया से लड़ते हैं,
कितने भी थके हों,
पर तुम्हारे लिए हमेशा तत्पर रहते हैं
जो तुम्हारे लिए खुद से पहले सोचते हैं

चाची कैसी होती है?
जो खुलकर कह नहीं पाती,
पर तुम्हारी हर परेशानी का ध्यान रखती है

मौसी कैसी होती है?
जो तुम्हें हँसाए,
तुम्हारी माँ का दुख बाँटे,
और फिर तुम्हारे साथ चुगली भी कर सके!

परिवार कैसा होता है?
थोड़ी नोकझोंक, थोड़ा प्यार,
इसी में पूरा संसार और
दुनिया से पहले शास्त्रकार होता है

– आशी चौधरी

यह कविता परिवार के हर रिश्ते की खूबसूरती को दर्शाती है। रिश्ते सिर्फ खून से नहीं, बल्कि भावनाओं से बनते हैं, और यही भावनाएँ उन्हें अनमोल बनाती हैं।

हिन्दी अपनी भाषा

सरस सुगंध सहज सुंदर है, हिन्दी अपनी भाषा।
भारत की यह लोक चेतना, बने विश्व की भाषा।
सरस सुगंध सहज सुंदर है, अपनी भाषा।

विविध रूप से सजी हुई, ऐसी है रंग रंगोली।
मिश्री सी कानों में घोले, मीठी इसकी हर बोली।
हर नाते और रिश्ते की अलग–अलग परिभाषा।
सरस सुगंध सहज सुंदर है, हिन्दी अपनी भाषा।

संस्कृति की पहचान है हिंदी, भारत की भाल की बिंदी।
हिंदोस्ता की शान हैं हिंदी, राष्ट्री का सम्मान है हिंदी।
जन–गण–मन की अभिव्यक्ति, यही विधान अभिलाभ।
सरस सुगंध सहज सुंदर है, हिंदी अपनी भाषा।

सही हिमालय की ऊँचाई, यही हिन्द की गहराई।
गंगा यमुना का संगम है, ब्रम्हपुत्र की चौड़ाई।
भारत की बहुतन के मन की यह भाषा।
सरस सुगंध सहज सुंदर है, हिंदी अपनी भाषा।

रस–व्यंजन–काव्य–अलंकार का, यह गौरवशाली संचय।
मुक्तक–दोहे–छंद–चौपाई देते इसका परिचय।
हिंदू–मुस्लिम–सिक्ख–ईसाई सब के जीवन की आशा।
सरस सुगंध सहज सुंदर है, हिन्दी अपनी भाषा।

सुभाष कुमार नेमा
सलाहकार (आंतरिक लेखापरीक्षा)

पलछिन

मेरा वक्त... ये सबका है, बस मेरा नहीं !

सुबह से लेकर रात तक का वक्त,

सबसे पहले उठकर, सबके बाद सोने का वक्त,

निमिष बीत जाता है, नाजाने कहां चला जाता है ये वक्त !

घड़ी की सुईयों की तरह भागति हुई मैं,
और भागता हुआ मेरा वख्त,

मेरी बंद मुट्ठियों में रेत सा फिसलता हुआ, मुझसे दूर... और दूर....

उसे बचाती हुई मैं... हर काम के लिए, हर अपने के लिए !

बस खुद के लिए ही नहीं बचा सकी,
कुछ लम्हे सुकून भरे....

जिनमें करुँ पूरा वो, अधूरा है जो मेरे मन में !

कुछ अधूरी ख्वाहिशें, कुछ अधूरे सपने....

जिये 'स्वप्न' सिर्फ अपने लिए कुछ पल!

सोचती हूं मैं अक्सर की ...

चुरा लू अपने ही वक्त से....

कुछ वक्त अपने लिए...

कुछ वक्त अपने लिए...

स्वप्निल लौवंशी
(कनिष्ठ सहायक)

भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार का जहर घुट रहा है देश में,
जिसे पीना है सभी को आज कल में।
कुछ लोगो और अफसरों की जेबें भर रही हैं,

देश के पैसों से उनके घर अशर्फी भर रही हैं।
भ्रष्टाचार के कारण देश पीछे होता जा रहा है,
क्योंकि यहाँ के कुछ नेता और अफसर
ईमानदार नहीं हैं।

ईमानदारी से काम करने वालों की सुनी नहीं
जाती है,
और भ्रष्टाचार करने वालों का सम्मान किया
जाता है।
भ्रष्टाचार की चोट से देश को बचाना होगा,

वर्ना ये देश को तबाह कर देगी।
भ्रष्टाचार को खत्म करना होगा देश से,
वरना ये देश के लिए घातक साबित होगा।
वर्ना क्या क्या हो सकता है ?
वर्ना देश की प्रगति रुक जाएगी,
वर्ना देश की एकता खत्म हो जाएगी,
वर्ना देश के लोगों का भविष्य खराब हो
जाएगा,

वर्ना देश की तरक्की रुक जाएगी,
वर्ना देश के लोगों का जीवन अस्त व्यस्त हो
जाएगा,
वर्ना देश की सुरक्षा खतरे में पड़ जाएगी

अशोक कुमार मिश्र
पुस्तकालय सहायक

गंगा

कभी – कभी मेरे जहन में एक सवाल आता है

क्या होता अगर गंगा कभी हिमालय से चलती
ही नहीं अपनी यात्रा के लिए ?

क्या वो जीवन दे पाती समूचे भारत को ?

क्या उसे भी घर का मोह हुआ होगा हर बेटी
की तरह ?

पर शायद उसने भी खुद को समझा लिया
होगा पिता के घर का मोह तो छोड़ना ही होगा
एक दिन,

फिर आज ही सही और निकल पड़ी होगी
अपनी यात्रा के लिए।

शायद वो भी नहीं जानती थी कि मंजिल
कैसी होगी।

पर वो चलती रही गली – गली ,गााँव–गााँव ,
शहर – शहर कोसो दूर अपने घर से।

कुछ तो था जो उसे भी ले गया पूरे देश को
नापता हुआ शायद उसका अपना ‘अस्तित्व’।

उसकी यात्रा ही रही होगी जो अंत में सागर
भी सागर न रह पाया और हो गया गंगा
सागर।

कभी – कभी सोचती हु गंगा अगर घर से न
निकलती तो क्या हो पाती ‘गंगा’?

और क्या रह पाती गंगा जीवन भर अपनी ही
खोज किये बिना ?

– मानसी
छात्रा, भूपरिदृश्य

समाज में परिवर्तन हेतु योग का महत्व

''स्वस्थ शरीर में ही शुद्ध बुद्धि का वास होता है।''

प्रस्तावना – योग शब्द से सामान्य शब्दों में समझा जा सकता है, किसी मानव का मानव से जुड़ाव करवाएं अर्थात् चाहे व शारीरिक हो मानसिक यो या अध्यात्मिक, मानव योग के माध्यम से सिर्फ अपने शारीरिक स्वास्थ्य को ही बेहतर नहीं रखता अपितु वह अपनी मानसिक स्थिति को शांत समय और सुबोध बनाकर अपनी एक अलग पहचान बनाता है। और व्यक्तित्व को परिभिकृत करता है, योग व साधन बन सकता है, जिससे अध्यात्मिकता को पुरजोर तरीके से शीर्ष स्तर पर पहुंचाया जा सकता है, शास्त्रों में कहा गया है, ''योगंस्त्र मनुष्यं सम्पूर्ण'

योग का महत्व – जब बात आती है, योग के महत्व की तो हमें सोचने पर विवश होना ही होता है, कि आखिर योग के बिना और जीवन में इसका क्या महत्व है– आप कल्पना करिएं या अपने आस–पास देखिए शायद कोई व्यक्ति योग को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बना चुका हो और उसके जीवन में कैसे बदलाव आएं हैं। आगे उस व्यक्ति के चेहरे पर अद्भुत तेज स्पष्ट देख सकते हैं। मैं आपको कुछ उदाहरण के माध्यम से समझाने की कोशिश करूंगा। चाहे स्वामी विवेकानंद जी हो जिन्होंने शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन में उसको पृश्ठ सहित बताने या याद रखने की शक्ति के पीछे का कारण सिर्फ योग ही था। योग शारीरिक, मानसिक, अध्यात्मिक और सामाजिक स्तर पर उपलब्धि और लाभ प्राप्त करता है।

योग व मानव का संबंध – हम प्राचीन काल से देखें तो बह्मा, विष्णु, महेश ही रहा होगा। भगवान शंकर सैकाड़ों वर्षों तक योग समाधि में रहते थे। और मानव जाति की रक्षा के लिए हमेशा किसी न किसी रूप में प्रकट हुए। प्राचीन पुराणों में चाहे, जामवंत जी हो या अश्वथामा (महाभारत) जिनको कहा जाता है यह आज भी जीवित हैं। उनके पीछे भी योग शक्ति ही है। मध्यकालीन युग में मनुष्य का जीवनकाल भी अध्यात्मिक हुआ करता था। जो आज घटता चला जा रहा है, जो चिंता का विषय है, क्योंकि योग का महत्व लोग भूल चुके है। आधुनिक मानव समाज व योग – आधुनिक मानव सभ्यता ने जहां एक ओर अभूतपूर्व प्रगति की है, वहीं वह बाहरी चकाचोंध में इतना उलझ गया है, कि व अपनी अंदर की वास्तविक शक्ति को भूल चुका है, वह पूर्णतः मशीनरी या टेक्नोलॉजी पर आश्रित हो गया है। और शारिरिक व्यायाम के रूप में वर्तमान कान्सेप्ट जिम पर आ चुका है, लेकिन उसे यह मालूम होना चाहिए कि तरीके से योग का सहारा ले प्रयोग करें तो शारिरिक के साथ –साथ मानसिक संतुलन प्राप्त किया जा सकता है।

वर्तमान सरकार की पहल व योग – वर्तमान सरकारों ने योग के महत्व को समझा ही नहीं है, अपितु इसके लिये कार्य भी किया है। योग दिवस को घोषित कर प्रत्येक वर्ष इसको मनाया जाना, जिसमें देश के शीर्ष नेत्त्व प्रधानमंत्री की उपस्थिति में सहयोग वर्तमान सरकार द्वारा योग की शिक्षा में एक महत्वपूर्ण विषय बना दिया गया है। कुछ विश्वविद्यालयों जैसे डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यायल जैसे संस्थानों में योग पर कोर्स भी उपलब्ध हैं। वर्तमान में योग गुरू रामदेव जी को भी याद करना हम भूल नहीं सकते जिन्होंने योग को आगे लाया है। ऐसे ही कार्य चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हम पुनः विश्व गुरू भारत कहलायेंगे और जिसका आधार होगा योग और योग के साथ युवा समाज की सहभागिता। उपसंहार – जब अंतिम में हम निष्कर्ष पर पहुंचते हैं, तो स्पष्ट होता है कि योग ने मानव जीवन को हमेशा एक बेहतर जीवन जीने की अद्भुत शक्ति प्रदान की तो है ही साथ ही इसकी सहायता से जीवन व ईश्वर को प्राप्त भी करने में आगे लाया है। भौतिक, शारीरिक सुख के लिये एक एक प्रमुख साधन है।

''स्वस्थ शरीर निरोगी काया''

आयुष दांगी
पुस्तकालय प्रशिक्षु
प्रथम पुरस्कार –निबंध प्रतियोगिता

समाज में परिवर्तन हेतु योग का महत्व

योग का शाब्दिक अर्थ है जोड़ना जो कि शरीर व मन को एक साथ जोड़ने का कार्य करता है। वैदिक काल से योग को अध्यात्म से जोड़ने का मार्ग बताया गया है। प्राचीन काल में योगी मनीषियों द्वारा शरीर को स्वस्थ बनाने एवं मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिये विभिन्न प्रकार के योगासन एवं यौगिक क्रियाओं द्वारा समाज को शिक्षित किया एवं इस सीखने व सिखाने की प्रक्रिया को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाते हुए इसे लिपिबद्ध भी किया। कहते है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन निवास करता है। इस कारण आजकल के समाज में योग की महती आवश्यकता है। समय–समय पर विभिन्न महामारियों से बचाव हेतु हमारे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिये योगासन की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। योग का प्रतिदिन अभ्यास जीवन को नियमित एवं जीवन शैली को प्रकृति के अनुकूल बनाता है। प्रायः देखा गया है कि नियमित योगासन करने वाले व्यक्ति की प्रतिरोधक क्षमता अच्छी होने की वजह से व्याधि से शीघ्र आराम मिल जाता है। योगासन से शारीरिक कार्यक्षमता में वृद्धि होती है। साथ ही मानसिक एकाग्रता बढ़ती है। यह दोनों ही (शारीरिक, मानसिक क्षमता) किसी भी समाज व राष्ट्र के विकास हेतु अतिआवश्यक है। समाज तभी स्वस्थ रहेगा जब समाज में रहने वाले व्यक्ति स्वस्थ रहेंगे, तन से भी व मन से आज समाज में आर्थिक प्रतिस्पर्धा में कारण व्यक्ति का जीवन तनाव मुक्त है। ऐसे में योग द्वारा प्राणायाम द्वारा तनाव को बहुत सीमा तक नियंत्रित किया जा सकता है। इस स्थिति में मानसिक अशांति होने के कारण, ईर्ष्या, द्वेष के कारण होने वाली असामाजिक स्थिति से भी निजात मिलती है। जब व्यक्ति का मन शांत रहता है तो अच्छे विचारों से समाज में तथा कार्यक्षेत्र में कार्यदक्षता इनसे समाज में एक सृजनात्मक एवं स्वस्थ वैचारिक क्रियाकलापों को आधार मिलता है।

भारत में सरकार द्वारा जीडीपी का एक बड़ा हिस्सा दवाईयों व उपकरणों के समान पर खर्च हो रहा है। योग द्वारा स्वस्थ रहने के कारण समाज में दवाईयों के कम इस्तेमाल/प्रयोग से एक तरफ आम आदमी को अर्थव्यवस्था सुधर रही है। तथा दूसरी तरफ सरकार भी इन धन का उपयोग दूसरे जनकल्याण के कार्यों में लगा रही है।

योग की मदद से सरकार जेलों में कैदियों को नियमित एवं शारीरिक विकास, मानसिक विकास हेतु कैम्प चला रही है। जिससे इस संज्ञा के दौरान उनके अंदर जीवन शैली को सुचारू बनाने व आत्मविश्वास बढ़ाने में मदद मिल सके।

बच्चे राष्ट्र एवं समाज निर्माण में प्राथमिक इकाई होते हैं। इस कारण विद्यालयों एवं कालेजों में योगाभ्यास को अनिवार्य कर दिया है। जिससे बाल्यकाल से ही बच्चे नियमित आत्मविश्वासी, स्वस्थ रह सकें।

स्वस्थ समाज ही स्वस्थ राष्ट्र को जन्म देता है। योग की आवश्यकता न केवल शारीरिक, मानसिक विकास हेतु है वरन किसी भी समाज को अनुशासन में रखने हेतु भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अनुशासित समाज में बुराई, क्लेश की जगह नहीं रहती है। सामाजिक व आर्थिक विकास में वो देश अग्रणी है जहां पर अनुशासन प्रथम स्थान पर है। एक छोटा सा देश जापान इसका एक उदाहरण है।

समाज में नशा एक बड़ी व्यापक कुरीति है। इस का असर परिवार पर, मोहल्ले, कस्बे व देश पर भी पड़ता है। योग द्वारा नशा उन्मूलन के कई कार्यक्रमों में इस पर कार्य हो रहा है।

आनंद किशोर सिंह
अनुभाग अधिकारी
द्वितीय पुरस्कार – निबंध प्रतियोगिता

विकसित भारत का एक स्वरूप

भारत वर्ष एक प्राचीन विरासत से युक्त दर्जे का एक महत्वपूर्ण देश है यहां की संस्कृति एवं ज्ञान ने चिरकार तक सम्पूर्ण दुनिया को ज्ञान का मार्ग दिखाया है। कालान्तर में स्थापित नालंदा विक्रमशिला विश्वविद्यालय इसके ज्ञान भंडार का स्रोत रहा है। हालाकि बौद्ध काल के पश्चात जहां अनेक विदेशियों का आक्रमण आरंभ हुआ जिसके कारण भारत के ज्ञान विज्ञान एवं विकास को गहरा झटका लगा। तद उपरांत मुगल तथा ब्रिटिश काल ने भारत की ज्ञान परम्परा एक जीवन शैली को लगभग समाप्त ही कर दिया । आजादी के बाद से ही विभिन्न सरकारों ने भारत को विकसित राष्ट्र के रूप में उन्नत करने की दिशा में अनेक प्रयास किये हैं जो आज भी जारी हैं। प्रथम प्रधान मंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू जी का पंचशील सिद्धांत, हरित क्रांति, ओद्योगिकीकरण, स्वदेशीकरण, एवं चंडीगढ़ के रूप में विकसित शहरीकरण का प्रयास आधुनिक विकसित भारत के निर्माण में अहम कदम था। उसके उपरांत श्रीमति इंदिरा गांधी जी के काल में बैंकों का राष्ट्रीयकरण, परमाणु परीक्षण एवं अंतरिकक्ष में पहुंचने की ओर किये प्रयास प्रशंसनीय है। जिसे की राजीव गांधी जी के कम्प्यूटरीकरा के माध्यम से गति मिली तथा देश की कार्य पद्धतिमें अमूलचूल परिवर्तन आया, यह विकसित भारत की ओर एक अहम कदम साबित हुआ।

वर्तमान में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा भी भारत को एक उन्नत एवं विकसित भारत बनाने का लक्ष्य लिया गया है। जिसके तहत हर दिशा में कदम उठाये जा रहे हैं चाहे वह आर्थिक संबल बनना है। स्वावलंबी बनना हो या नये आयामों के प्रति रूझान बढ़ाना हो। देश को विकासशील के स्थान से विकसित भारत बनाने के लिये सम्पूर्ण भारतवासियों को प्रयास करना होगा तथा माध्यम को अपनाना होगा जो शीघ्रता से लक्ष्य तक पहुंचा सके।

विकसित भारत का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जिसमें देश के प्रत्येक नागरिक शिक्षित, सक्षम एवं खुशहाल हो। एक ऐसा विकास जो प्रकृति के अनुरूप हो तथा जिम्मेदारी युक्त विकास सुनिश्चित कर सके। ऐसा विकास जहां सभी आयु वर्ग, लिंग एवं अन्य पहचान के बिना समग्र विकास का हिस्सा बन सके। जहां सामाजिक न्याय का भाव हो, अपराधी मानसिकता में भारी कमी हो सम्भवतः अपराध ही ना हो। जहां परस्पर भाईचारा एवं सांस्कृतिक सम्मान हो लोग अपनी मूलभूत आवश्यकता को पूरा करने में सक्षम हो स्वास्थ शिक्षा एवं रोजगार के अवसर हों। आर्थिक सामाजिक तथा अन्य किसी भी तरह की विषमता से मुक्त हो।

जहां सभी के प्रति आदर, सम्मान एवं करूणा का भाव हो जहां बेहतर संसाधन के अवसर आसानी से प्राप्त हों। जहां कर्तव्य का भाव निहित हो। हालांकि विभिन्नता से भरे देश में इतनी समानता का स्वप्न मुश्किल है परन्तु असंभव कुछ भी नहीं। कोई भी विकास का सच्चा स्वरूप तब ही प्राप्त हो सकता है जब अधिकार एवं कर्तव्य दोनों में समानता का भव समावेश हो केवल तकनीकी ज्ञान एवं सुदृढ आर्थिक आधार से यह संभव नहीं होगा। मानव समाज का विकास का सहीं स्वरूप मानव अपने प्राकृतिक, सामाजिक आर्थिक, सांस्कृतिक पर्यावरण के पूर्ण दोहन एवं संरक्षण में निहित है। विकास की सच्ची अवधारणा इस बात में भी है कि हम संसाधन को दोहन बुद्धिमत्ता से करें तथा आने वाली पीढ़ी के लिये पर्याप्त संसाधन सुनिश्चित कर सकें। आडम्बर बाहरी दिखावा से बचना एवं देश काल के अनुरूप अपनी शिक्षा ज्ञान विज्ञान का प्रसार उपयोग एवं संरक्षण महत्वपूर्ण है। वैश्विक प्रतिस्पर्धा को विचारपूर्ण तरीके से लेना होगा तथा मोलिक/स्वदेशी आवश्यकता अनुरूप प्रयास करते हुए सभी जनमानस का जीवन उत्थान एवं खुशहाली पूर्ण जीवन जीने का लक्ष्य ही विकास की सच्ची अवधारणा होगी।

प्रो. अजय कुमार विनोदिया
प्राध्यापक
तृतीय पुरस्कार – निबंध लेखन

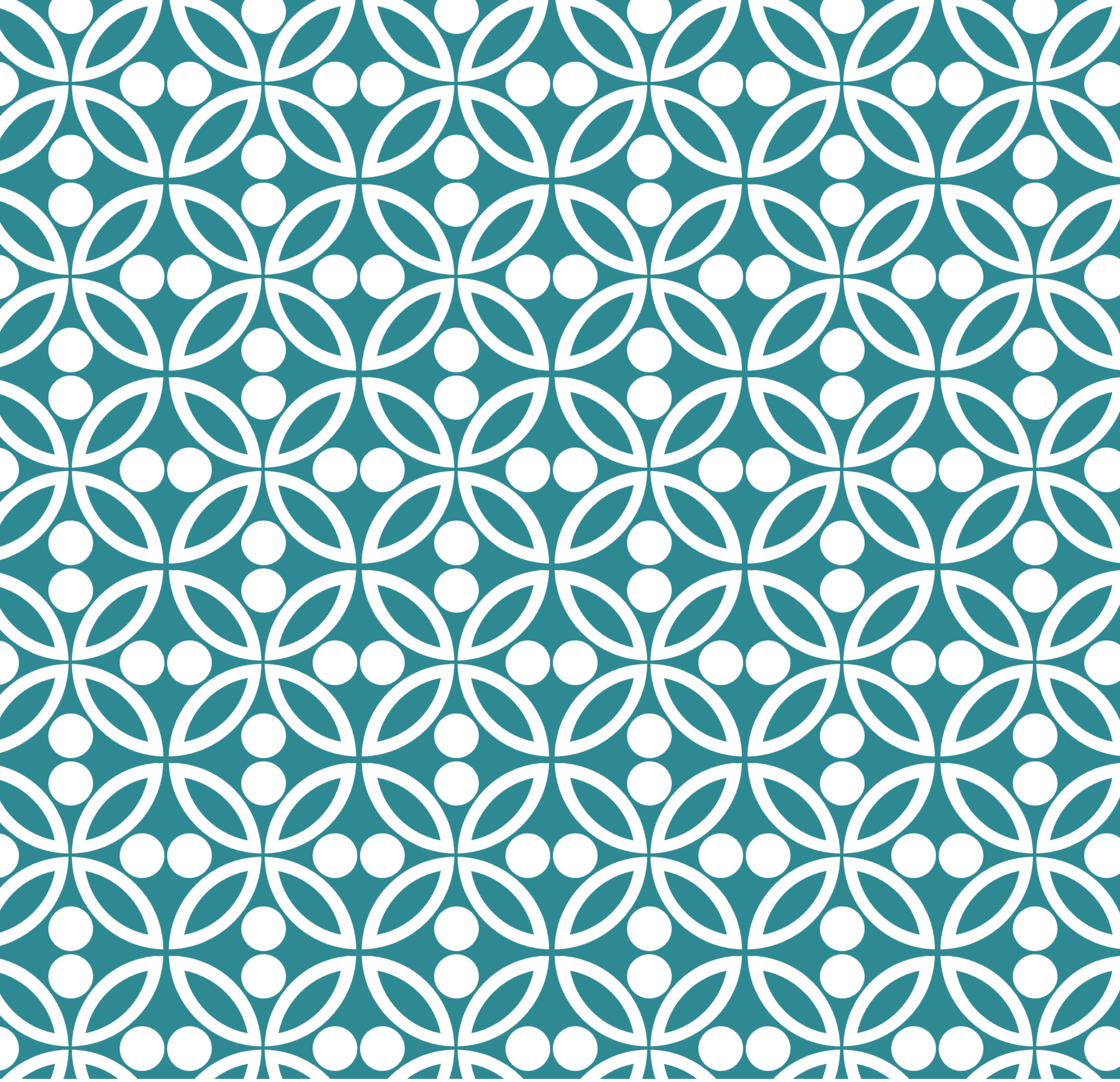

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल

राष्ट्रीय महत्व का संस्थान,
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार